जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी

भारत सरकार पंजीसन नं. : 72322/91

शेखावाटी सन्मार्ग

सतीनां वै सतांचैव दातृणां विदुषा तथा।
आकरं गुण शीलानां लक्ष्मणदुर्गं मनोहरम्।।

नमोस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै।
नमोस्तु रुद्रेन्द्र यमानिलेभ्यो नमोस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणेभ्यः।।

Mob: 9828665353
Web: www.srrividya.com

पाक्षिक/वर्ष-31/अङ्क - 28 | लक्ष्मणगढ़ 01 फ़रवरी 2022 | मूल्य (विशेषाङ्क सहित) 100/- रु.वार्षिक

शेखावाटी को संभाग बनाने की मांग

अधिवक्ताओं ने दिया सीएम के नाम ज्ञापन

लक्ष्मणगढ़ | शेखावाटी अंचल के सीकर, चूरू व झुंझुनूं जिलों को मिलाकर अलग से संभाग गठित करने की मांग को लेकर शुक्रवार को अभिभाषक संघ ने मुख्यमंत्री को ज्ञापन भेजा। संघ के अध्यक्ष हरफूल कुमावत के नेतृत्व में यहां उपखण्ड अधिकारी को दिए गए ज्ञापन में बताया गया है कि शेखावाटी अंचल के सीकर, चूरू व झुंझुनू जिलों का संयुक्त क्षेत्रफल, जनसंख्या तथा प्रशासनिक संरचना प्रदेश के अन्य कई संभागों से विस्तृत होने के साथ साथ यहां खनिज संपदा, लोककला एवं पर्यटन तथा शैक्षणिक स्तर पर विकास की अपार संभावनाएं है, किन्तु सीकर व झुंझुनूं जिलों के जयपुर संभाग व चूरू जिले के बीकानेर संभाग में होने के कारण अपेक्षित विकास नहीं हो पा रहा है।

ज्ञापन में शेखावाटी अंचल के सीकर, चूरू व झुंझुनू जिलों को मिलाकर अलग से संभाग गठित करने की मांग की गई है। ज्ञापन देने वालों में एडवोकेट सज्जन सैनी, बलबीर देवा, नदीम बारी, संजय कुमार, महिपाल, राजेन्द्र सिंह, इंकलाब खत्री, अशोक ढ़ाका, मुकेश सेवदा, शीशपाल भाटी, सत्यवीर भास्कर आदि प्रमुख थे।

शेखावाटी संभाग बनाने की मांग को लेकर अधिवक्ता आंदोलित

शेखावाटी को संभाग बनाने की मांग को लेकर कांग्रेस किसान मोर्चा के प्रदेशाध्यक्ष राजेंद्र झूरिया के नेतृत्व में कलेक्टर को ज्ञापन दिया गया। इस दौरान प्रदेशाध्यक्ष राजेंद्र झूरिया ने कहा कि यहां के लोग पिछले 15 साल से ये मांग करते आ रहे हैं। शेखावाटी संभाग बनने पर यहां के विकास को गति मिलेगी। क्योंकि यहां स्थित कोचिंगों में हर साल देशभर से लाखों स्टूडेंट्स शिक्षा पाने आते हैं। मुख्यमंत्री से भी इस बजट में शेखावाटी को संभाग घोषित करने की मांग की जाएगी। ज्ञापन के दौरान मोर्चा के प्रदेश प्रवक्ता भागीरथ, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. सुरेंद्र थालौड़, जिलाध्यक्ष सज्जन कुमावत, पंकज रेप्सवाल, राकेश मूंड, आरीफ खान व मोहम्मद फारुख गौड़ आदि मौजूद रहे।

नीमकाथाना | प्रदेश में सीकर, चूरू और झुंझुनूं जिलों को मिलाकर शेखावाटी संभाग बनाने की मांग पर शुक्रवार को अभिभाषक संघ ने मुख्यमंत्री के नाम तहसीलदार सत्यवीर यादव को ज्ञापन दिया। अभिभाषक संघ अध्यक्ष सत्यनारायण यादव ने बताया कि तीनों जिलों के लोग वर्षों से शेखावाटी संभाग बनाने की मांग कर रहे हैं। अभिभाषक संघ भी शेखावाटी संभाग की मांग कर रहे हैं। क्षेत्रफल, जनसंख्या सहित भौगोलिक स्थिति में भी शेखावाटी संभाग दूसरे संभागों से आगे है। ऐसे में वकीलों ने मुख्यमंत्री से तीनों जिलों को मिलाकर शेखावाटी संभाग बनाने की मांग रखी है। ज्ञापन देने वालों में अध्यक्ष सत्यनारायण यादव, देवेंद्र चौधरी, गोपाललाल शर्मा, रामवतार लांबा, राजेन्द्र भाटिया, होशियारसिंह बड़सरा, दर्शनसिंह, बलवीर सिंह जाखड़, संजय गुर्जर, ओमप्रकाश महला व हरिसिंह शामिल थे।

जनसंख्या व क्षेत्रफल में छोटा होने के बावजूद भरतपुर संभाग बना तो शेखावाटी क्यों नहीं

श्रीमाधोपुर | शेखावाटी के सीकर, चूरू व झुंझुनूं जिलों को मिलाकर शेखावाटी संभाग बनाने की मांग को लेकर शुक्रवार को अभिभाषक संघ श्रीमाधोपुर ने सीएम के नाम एसडीएम दिलीप सिंह राठौड़ को ज्ञापन दिया। अभिभाषक संघ के अध्यक्ष एडवोकेट बनवारीलाल

कुड़ी व महासचिव रामजीलाल सैनी के नेतृत्व में दिए ज्ञापन में बताया गया कि सीकर का क्षेत्रफल 7742.43 वर्ग किलोमीटर, झुंझुनूं का 5928 वर्ग किमी व चूरू का 13859 वर्ग किमी क्षेत्रफल है। जिनका कुल क्षेत्रफल 27529.43 वर्ग किमी है।

भरतपुर संभाग में चार जिले भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर जिलों को मिलाकर संभाग बनाया गया है, जिसकी जनसंख्या और क्षेत्रफल चूरू, झुंझुनूं, सीकर से कम है। इसलिए शेखावाटी को संभाग बनाया जाना न्याय संगत व उचित है। वर्तमान में सीकर व झुंझुनूं जिले का राजस्थान उच्च न्यायालय पीठ, जयपुर के यहां क्षेत्राधिकार है, जबकि चूरू जिले का क्षेत्राधिकार राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर है, जो यहां की जनता के प्रतिकूल है।

प्रस्तावित शेखावाटी संभाग बनने से सभी तीनों जिलों का राजस्थान उच्च न्यायालय पीठ जयपुर के यहां क्षेत्राधिकार होना संभव बन सकता है। अतः शेखावाटी को संभाग बनाया जाए, ताकि आमजन को संभागीय स्तर की सेवाएं, राजस्व न्यायालय, भू-प्रबंध बाबत आदि कार्य संभागीय स्तर पर अतिशीघ्र हो सकें। ज्ञापन देने के दौरान एडवोकेट राम सिंह शेखावत, शंकर लाल सैनी, अनिल यादव, बजरंग यादव, सुभाष यादव, विनोद सैनी, विक्रम सिंह बांकावत, झाबरमल जाजोद व झाबरमल सहित कई अधिवक्ता मौजूद थे।

फतेहपुर। कस्बे में शुक्रवार को अभिभाषक संघ द्वारा शेखावाटी को अलग से संभाग बनाने के लिए मुख्यमंत्री के नाम पत्र तैयार किया गया। अभिभाषक संघ द्वारा सीकर,चूरू व झुंझुनूं जिलों को सम्मिलित कर शेखावाटी संभाग बनाने की मांग के लिए अध्यक्ष सुरेंद्र पाल सिंह कस्वा व संघ महासचिव कपिल दहिया के नेतृत्व में मुख्यमंत्री के नाम तहसीलदार को ज्ञापन सौंपा गया।

संघ के कोषाध्यक्ष राजेंद्र शर्मा ने बताया कि यह मांग सभी की सहमति से रखी है। इस अवसर पर उपाध्यक्ष मोहम्मद फेज, अधिवक्ता भीमसिंह महला, महिपाल मूंड, भोजेन्द्र सिंह, राजेश चौधरी, इमरान खान, अब्दुल रशीद खान, प्रियवृत, मोहम्मद एजाज, राजपाल, विद्याधर सेन, मोहम्मद आरिफ खोखर, मुकेश पारीक, दिलीप भोजक, विश्वनाथ सैनी सहित अन्य अधिवक्ता उपस्थित रहे।

दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है 111 वर्ष पुराने श्री सरस्वती पुस्तकालय में

फतेहपुर. कस्बे के ऐतिहासिक सरस्वती पुस्तकालय का गौरवमय इतिहास हैं और इसकी स्थापना यहां के सेठ साहूकारों ने आजादी से पूर्व 111 साल पहले 14 मई 1910 को की थी। पुस्तकालय सचिव अश्नी शर्मा ने बताया कि वासुदेव गोयनका, नंदलाल सरावगी, नंदलाल बाजोरिया आदि तत्कालीन लोगों ने 14 मई 1910 वैशाख शुक्ल 6 सवंत 1967 को पबृद्धिचंद वैद्य लक्ष्मणगढ के सभापतित्व में गुलराज पूर्णमल सिंहानिया की दुकान में बैठकर कस्बे के सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना का प्रस्ताव रखा, जो सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ और 100 पुस्तकों के साथ इसके श्री सरस्वती पुस्तकालय नामकरण के साथ शुरू किया गया । श्री सरस्वती पुस्तकालय में अनेक दुर्लभ पुस्तकों का खजाना है, कुछ पुस्तकें तो इतनी दुर्लभ है कि वे अन्यत्र उपलब्ध ही नहीं हैं।

पुस्तकालय में बांगला और संस्कृत भाषा में ताडपत्रों पर लिखी हस्तलिखित पुस्तक, जिसकी लंबाई साढे 21 इंच और चौडाई मात्र एक इंच है। उडिया भाषा तांत्रिक ग्रंथ कपालिका, हिनायन कपालिका संप्रदाय विसं 1456 अर्थात् सन् 1399 जो उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में लिखी गई थी, आज इस पुस्तकालय की जान है। ऋग्वेद संहिता डा. मैक्समूलर 1845, सन 1801 चाइना का दण्ड विधान की सचित्र पुस्तक, सन 1895 में बुद्ध दर्शन की सिल्क पर मुद्रित पुस्तक यहां है।

सम्पादकीय

" सन्मार्ग एव सर्वत्र पूज्यतेनाऽपथः क्वचित् "

सतगुरु सम कोई नहीं, सात द्वीप नौ खंड

गुरु पारस को अंतरो, जानत हैं सब संत ।
वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत ।।

संत कबीर के उपर्युक्त दोहे में गुरु की महान महिमा गायी गई है, जिसमें कबीर कहते हैं कि गुरु और पारस में अंतर है, यह सभी संत जानते हैं। पारस तो लोहे को सोना ही बनाता है, पर गुरु शिष्य को अपने समान ही महान् बना देते हैं।

गुरु की ऐसी महानता के कारण ही तो उन्हें ईश्वरतुल्य माना गया है। वस्तुतः सद्गुरु साक्षात् ब्रह्मस्वरूप ही हैं | निराकार ब्रह्म ही जीव के उद्धार के लिए साकार सद्गुरु के रूप में स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं। गुरु और ईश्वर भिन्न नहीं, अभिन्न ही हैं। ऐसे सद्गुरु की प्राप्ति मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि कही जा सकती है।

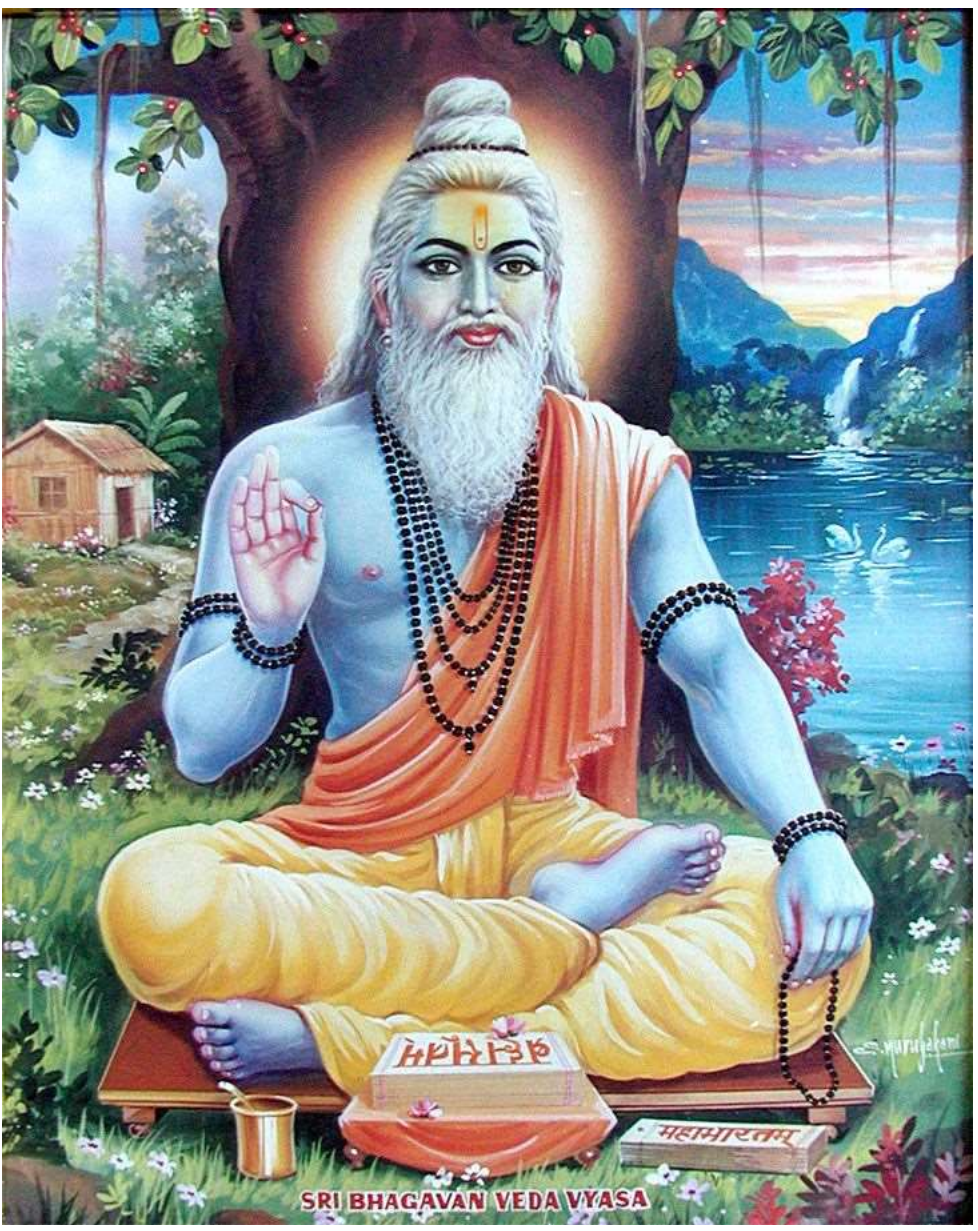

आनंद है, परमानंद है, ब्रह्मानंद है। तभी तो संत कबीर ने कहा है

सतगुरु सम कोई नहीं, सात द्वीप नौ खंड ।
तीन लोक न पाइए, अरु इक्कीस ब्रह्मांड ।।

अर्थात् आप सात द्वीप, नौ खंड, तीन लोक, इक्कीस ब्रह्मांडों में सद्गुरु के समान हितकारी किसी को नहीं पाएँगे। अतः ऐसे परम हितकारी गुरु के वचनों का पालन शिष्य को अक्षरशः करना चाहिए। ब्रह्मज्ञानी गुरु अपनी ब्रह्मदृष्टि से हमारे कई जन्मों को चलचित्र की भाँति देख लेते हैं और तदनुरूप ही हमें साधन, भजन, आदेश, अनुशासन क को अपनाने की सलाह देते हैं। गुरु के वचनों का पालन इ करते समय शिष्य को उसमें हानि-लाभ आदि का विचार न करते हुए सिर्फ गुरु आज्ञा का पालन करना चाहिए।

आज तक जिसने भी अपने गुरु के आदेश का पालन किया, उसका मंगल-ही-मंगल हुआ है। माता उमा ने अपने गुरु नारद जी के कहने पर भगवान् शिव को पति रूप में पाने के लिए कठोर तप किया और अंततः वह भगवान् शिव को पतिरूप में प्राप्त कर सकीं। इसलिए माता उमा गुरुभक्ति व गुरु के आदेश का पालन करने को लेकर अपने निज अनुभव को अभिव्यक्त करते हुए रामचरितमानस में कहती हैं

नारद बचन न मैं परिहरऊँ ।
बसउ भवनु उजरउ नहिं डरऊँ ।
गुर कें बचन प्रतीति न जेही ।
सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ॥

अर्थात पार्वती जी कहती हैं कि मैं नारद जी के वचनों को नहीं छोडूंगी, चाहे मेरा घर बसे या उजड़े, इससे मैं नहीं डरती । जिसको गुरु के वचनों में विश्वास नहीं है, उसको सुख और सिद्धि स्वप्न में भी सुगम नहीं होते।

हमें अपने गुरु के वचनों पर पूर्ण विश्वास करते हुए उनका सदैव पालन करना चाहिए। गुरु के वचनों को शुभ समझकर उनका पालन करना चाहिए, क्योंकि गुरु सब प्रकार से हमारे परम हितकारी हैं। मोक्ष, मुक्ति, प्रभुदर्शन आदि परम लाभ गुरुसेवा से, गुरुकार्य करने से, गुरुकृपा से शिष्य को स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं |

(अखण्ड ज्योति से साभार)

शशिकान्त जोशी
सम्पादक

समुद्र में न जाने कितने भयानक व भयावह तूफान आते रहते हैं, जिनमें न जाने कितने नाव और नाविक तथा उस पर सवार लोग विशाल समुद्र के गर्भ में समा जाते हैं, पर जिस नाव की पतवार कुशल नाविक के हाथ में होती है, वह बड़े से-बड़े समुद्री तूफानों में भी अपनी नौका व उस पर सवार लोगों को सुरक्षित किनारे लगा देता है; पार लगा देता है।

यह जीवन भी भवसागर है, जिसमें काम, क्रोध, लोभ, मोह के रूप में अनेक झंझावात व तूफान उठते रहते हैं। व्यक्ति के चित्त में उसके जन्म-जन्मांतरों के, कर्म संस्कारों के तूफान आते रहते हैं जिनमें अबोध, अज्ञानी लोग अपने सुरदुर्लभ मानव जीवन की घोर हानि कर बैठते हैं।

जो लोग सद्गुरु की नाव में सवार हैं, वे गुरुज्ञान से न सिर्फ भौतिक जीवन में सुख-शांति व वैभव पाते हैं, बल्कि गुरुज्ञान का अमृत पीकर अपने चित्त पर जन्म-जन्मांतरों से जमी कर्म संस्कारों की कालिख को धोकर उसे निर्मल बना लेते हैं और अपने हृदय में दहकते हुए अँगारे के रूप में, अपने हृदय में जल रही दिव्य ज्योति में ही परमात्मा की दिव्य अनुभूति पाकर जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होकर उससे भी आगे पराभक्ति को प्राप्त कर लेते हैं और इस भवसागर को गुरुकृपा से सुरक्षित पार कर जाते हैं।

जो देवदुर्लभ मानव तन पाकर अपने लौकिक और पारलौकिक जीवन को आनंद और उमंग से भरकर भगवत् प्राप्तिरूपी जीवन के परम लक्ष्य को पाना चाहते हैं, उन्हें निराकार-निर्गुण ब्रह्म के साकार और सगुण रूप सद्गुरु को परमात्मभाव से पूजना चाहिए और उनका नित्य ध्यान करना चाहिए। सदैव यह भावना रखनी चाहिए कि सद्गुरु मेरे अंदर और बाहर सर्वत्र व्याप रहे हैं। सद्गुरु जो कुछ भी कहें, वह शिष्य के लिए मंत्र सदृश्य ही है। अस्तु गुरु के द्वारा बताए गए कार्य को किसी भी कीमत पर शिष्य को संपन्न करना चाहिए।

गुरु की मूर्तिपूजा तक सीमित रहने वाली गुरुभक्ति अधूरी है। असली गुरुभक्ति तो गुरु के द्वारा बताए गए आदर्श और अनुशासन को जीवन में अक्षरशः उतार लेने और उसे जीते रहने में ही निहित है। गुरु का कार्य साक्षात् नारायण का ही कार्य है।

गुरु की योजना साक्षात् नारायण की ही योजना है। गुरु का स्वप्न साक्षात् नारायण का ही स्वप्न है। शिष्य को बड़े-बड़े कष्टसाध्य यज्ञ, अनुष्ठान, पुरश्चरण, व्रत आदि से मिलने वाले फल गुरुसेवा से, गुरुकार्य करने से स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं।

अतः शिष्य को तन, मन, धन से, श्रद्धा से, भक्ति से गुरुकार्य में तल्लीन रहना चाहिए और उसे करते हुए स्वयं को बड़भागी समझना चाहिए कि ऐसा सुअवसर, भगवान् की योजना में, भगवान् के कार्य में अपनी सेवा - समर्पित करने का यह परम सुयोग नारायणरूपी सद्गुरु की कृपा से ही हमें प्राप्त हुआ है। अस्तु हमें किसी भी कीमत पर इस महान सुयोग को, महान अवसर को अपने हाथ से नहीं जाने देना चाहिए। इसी में हमारा उद्धार है, हित है, कल्याण है, मंगल है, शुभ है। इसी में

वाह भई शेखावाटी 'पर्यटन'

शानदार हवेलियों का बुलावा – आवो नी पधारो म्हारे देश

राव शेखा का घर–शेखावाटी। इस अंचल में चुरू, सीकर और झुंझनू सम्मिलित हैं। परीलोक जैसी हवेलियाँ, इस क्षेत्र को पर्यटकों के लिए स्वर्ग बनाती है। इस हवेलियों के वास्तुशिल्प और

इनकी दीवारों पर की गई रंग बिरंगी, अद्भुत चित्रकारी देखकर हर कोई ठगा सा रह जाता है। लगता है हम किसी कल्पना लोक में आ गए हैं। बहुरंगी राजस्थान के पर्यटन को बढ़ावा देने में यहाँ की अद्भुत हवेलियों का विशेष सहयोग है। राजस्थान के उत्तरी भाग में स्थित शेखावाटी अपने शिल्प और स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। यहाँ की हवेलियाँ और भव्य आशियाने, अट्ठारहवीं और बीसवीं शताब्दी के मध्य बनाए गए थे। शेखावाटी में बड़े-बड़े सेठों यथा बिडला, डालमिया, चमड़िया, पोद्दार, कानोडिया, गोयनका, बजाज, झुंझुनूंवाला, रूइया, खेमका, सर्राफ, सिंहानिया की हवेलियों, अधिकतर खाली पड़ी है। यहाँ सिर्फ चौकीदार रहते हैं, क्योंकि सेठों के परिवार अधिकतर बड़े शहरों या विदेशों में हैं। इन सेठों ने विदेशों के खूब दौरे किए और जब भारत के गाँवों में बैलगाड़ी और घोडागाड़ी से आगे लोगों ने कुछ नहीं देखा था. उस समय इन सेठों ने अपनी हवेलियों में विदेशों में देखी कारों, हवाई जहाजों के चित्र बनवाए।आज जब विदेशी यहाँ आकर यह हवेलियों देखते हैं तो चित्रकारी को देखकर अचम्भित रह जाते हैं। पौराणिक कथाओं, भगवान् राम और कृष्ण की वीरता की कथाएं और रंग बिरंगे फूल, पत्ते, बेल-बूंटे चिड़िया, मोर शेर, सांप, हिरण, हाथी-सभी तरह के पशु पक्षियों के चित्रों से सुसज्जित हवेलियाँ उस समय की कला यात्रा को जीवत करती हैं। यहाँ हवेलियों के अलावा मंदिर व बावड़ियाँ भी कलात्मक रूप से सजाई गई है। आइए शेखावाटी के अद्भुत सौन्दर्य का अवलोकन करें | राजस्थान में देखने के लिए यहां बहुत कुछ निराला है।

चूरु में सेठानी का जोहड़ा - जोहडा मतलब जलाशय, तालाब राजस्थान में रेगिस्तान होने के कारण शुरू से पानी की कमी रही है। इसलिए यहाँ कच्चे और पक्के जलाशय बनाए जाते थे जिनमें वर्षों का पानी एकत्र करके रखा जाता था। चूरू से 5 कि.मी. पश्चिम में रतनगढ़ की ओर जाने वाली सड़क पर सेठानी का जोहड़ा है। सन् 1899 में भगवानदास बागला की धर्म पत्नी ने इसे बनवाया था तथा इसमें एक मानसून से अगले मानसून तक पानी उपलब्ध रहता है।

कन्हैयालाल बागला की हवेली - मुख्य बाजार में यह हवेली 1880 में निर्मित की गई थी। इसमें बेजोड़ जालीदार काम है तथा अनूठी स्थापत्य कला है। हवेली के भित्ति चित्रों में प्रेम आधारित लोक आख्यानों का चित्रण किया गया है जैसे ढोला मारू की जीवन श्रृंखला, ऊँट पर बैठे प्रेमी प्रमिका आदि।

चूरु की अष्टखम्भा छतरी - सब्जी बाजार में सन् 1776 में बनी अष्ट खम्भा छतरी एक ऐतिहासिक महत्व वाला अष्ट खम्भा गुम्बद है। इसका बाहरी स्वरूप काफी नष्ट हो गया है। परन्तु इसके अन्दर की नक्काशी और भित्ति चित्र आज भी सलामत हैं।

रतनगढ़ किला – आगरा बीकानेर राजमार्ग पर बना रतनगढ़ किला, सूरत सिंह द्वारा बनवाया गया था तथा उनके पुत्र रतन सिंह के नाम पर इसका नाम रखा गया था। यह किला कई गाँवों से घिरा है तथा इसके मजबूत प्रवेश द्वार, अन्य स्मारक जो खण्डहर हो गए हैं और घंटाघर दर्शनीय है।

लक्ष्मी नारायण मंदिर – बाहर से साधारण दिखने वाला मंदिर भीतर से भव्य है। इसका प्रवेश द्वार कटावदार मेहराब व भित्ति चित्रों से सुसज्जित है। यहाँ का शांत वातावरण मन को शांति प्रदान करता है।

चूरु का दिगंबर जैन मंदिर - इस मंदिर की आंतरिक सजावट एक शाही दरबार जैसी है। दीवारों पर कांच के अलंकरण, राजपूत युग की भव्यता दर्शाते हैं। 150 वर्ष पुराने इस जैन मंदिर में कुछ उत्कृष्ट चित्र स्वर्ण रंगों में चित्रित किए गए हैं जो कि नैतिक जीवन की शिक्षाओं पर आधारित है।

ताल छापर अभयारण्य - उछलते-कूदते, अठखेलियाँ करते छोटे छोटे मृग शावक यानि हिरण के बच्चे आपका मन मोह लेंगे। ब्लैक बैंक यानि काले हिरण की यह सेक्चुअरी छापर गाँव में पेजो कि जयपुर से 210 कि.मी. दूर चूक के सुजानगढ़ तहसील में है। काले हिरण का यह अभयारण्य, खुले मैदान, बड़े पेड़ों तथा लताओं से आच्छादित है। यहाँ हिरणों के साथ रेगिस्तानी लोमड़ी, जंगली बिल्ली को भी देखा जा सकता है। पक्षी प्रेमियों के लिए भी यहाँ पर यहाँ यह अभयारण्य फॉरेस्ट डिपार्टमेन्ट के अधीन है तथा यहाँ बाकायदा उनका ऑफिस बना हुआ है, जहाँ से एन्ट्री की जाती है।

लक्ष्मणगढ़ किला - लक्ष्मणगढ़ नगर में यह किला गौरवशाली स्थापत्य का नमूना है। पूरे विश्व में यह स्थापत्य कला का अनूठा उदाहरण है जो कि यहाँ बिखरी चट्टानों के टुकड़ों को संजोकर बनाया गया था। इसके शिखर पर चढ़कर नीचे बसे लक्ष्मणगढ़ का विहंगम दृश्य दिखाई देता है।

झुंझुनूं जिले का मनसा देवी मंदिर - मनसा देवी को माता रानी और वैष्णवी देवी के नाम से भी पूजा जाता है। यह उत्तरी भारत के प्रतिष्ठित पूजा स्थलों में से एक है तथा सबसे पवित्र माना जाता है।

रघुनाथ जी मंदिर - बड़ा मंदिर नाम से पहचान बनाने वाला यह मंदिर रतनगढ़ के पास है। 19वीं शताब्दी में बना मंदिर, भगवान विष्णु के अवतार भगवान रघुनाथ या राम को समर्पित है। इसका प्रवेश द्वार काफी ऊँचा है तथा शीर्ष पर कपोलों की एक श्रृंखला है। जीवन के दुख दर्द दूर करने और शांति प्रदान करने के लिए इस मंदिर की बहुत मान्यता है।

फहेतपुर - फतेहपुर शहर कायमखानी नवाब फतेह मोहम्मद ने 1508 ईस्वी में स्थापित किया था। उन्होंने 1518 में फतेहपुर के किले का निर्माण करवाया। यह शहर एक समय सीकर की राजधानी के रूप में जाना गया था। आज फतेहपुर शेखावाटी की लोकप्रिय सांस्कृतिक राजधानी के रूप में जाना जाता है। यहाँ अनेक दर्शनीय जगह है, जिसमें से लक्ष्मीनाथ मंदिर सिंघानिया हवेली, नादिन ल प्रिंस कल्चरल सेंटर और फतेहचंद की हवेली उल्लेखनीय है।

रामगढ़ – कभी भारत के सबसे वैभवशाली नगरों में से एक यह नगर 1790 ई. में, सीकर के शासक श्री भैरव सिंह ने पोद्दार परिवार के सहयोग से स्थापित किया गया था। यहाँ के पुराने मंदिर, छतरियाँ तथा हवेलियों में बने चित्रों के लिए सुविख्यात है। रामगढ़ के पास ही बने के रामगोपाल की छतरी और पोददार हवेली विशेष रूप से दर्शनीय हैं।

खेतड़ी महल - 'झुंझनू खेतड़ी महल कला और वास्तु संरचना के सर्वोत्कृष्ट उदाहरणों में से एक है। इसे झुंझनू के हवा महल के रूप में भी जाना जाता है। 1770 में इस महल का निर्माण हुआ था। आश्चर्यजनक तथ्य है कि खेतड़ी महल में कोई झरोखे या द्वार नहीं है फिर भी इसे हवा महल के नाम से जाना जाता है। खेतड़ी महल का अनोखापन, हवा के अबाध प्रवाह हेतु व्यवस्थित रूप से बनाये गये भवनों के निर्माण के कारण है। महल के लगभग सभी कक्षों में सुव्यवस्थित स्तम्भ और मेहराब एक दूसरे से जुड़े हुए हैं, जो कि किले को शानदार समृद्ध रूप प्रदान करते हैं।

सनसेट पॉइंट मोडा पहाड़ - सूर्यास्त देखने के लिए मोड़ा पहाड़ एक लोकप्रिय स्थान है। अजीत सागर झील के तटों से लगा हुआ यह स्थान कई प्रवासी पक्षियों और बारसिंगा का घर है। इस स्थान का मनभावन प्राकृतिक सौन्दर्य पर्यटकों के लिए दर्शनीय बन पड़ा है।

राणी सती मंदिर - राणी सती मंदिर राजस्थान में झुंझनू जिले में स्थित विख्यात मंदिर है। इस मंदिर का इतिहास 400 से अधिक वर्षों का है। स्त्री शक्ति का प्रतीक यह मंदिर अपनी गरिमा और असाधारण चित्रों के लिए जाना जाता है। यह पुराने भारतीय तीर्थ के रूप में भी माना जाता है।

हजरत कमरूद्दीन शाह की दरगाह - नेहरा पहाड़ की तलहटी में खेतड़ी महल के पश्चिम में स्थित कमरूद्दीन शाह की दरगाह एक खुला व्यवस्थित परिसर है। जिसमें मस्जिद और मदरसा है. (यहाँ प्राचीन भित्ति चित्र अभी भी देखे जा सकते हैं, इसके मध्य में सूफी संत कमरूददीन शाह की अलंकृत दरगाह है।

श्री पंचदेव मन्दिर - शेखावाटी के झुंझुनूं में प्रसिद्ध श्री पंचदेव मंदिर स्थित है। इसके कोने कोने में बहादुरी और वीरता का अपना इतिहास बयाँ होता है। हवेली के सर्वोत्कृष्ट भित्तिचित्र पर्यटकों को वर्ष भर आकर्षित करते हैं। शेखावाटी क्षेत्र पर्यटकों को धार्मिक तीर्थस्थल के अलावा कई और मनोरम स्थल प्रदान करता है। मंदिर की स्थापत्य कला और रेखांकन, इसके चारा और सदाबहार उद्यान का संग इसे एक मन भावन स्थल बनाता है।

बंधे के बालाजी मंदिर - बंधे के बालाजी एकमंजिला, आधुनिक मंदिर है जिसके आसपास शिखर और पर्वत शिखायें हैं। यह भारत के लोकप्रिय हनुमान मंदिरों में से एक है। बालाजी की प्रतिमा हनुमान की अन्य प्रतिमाओं से अलग है। अन्य हनुमान मूर्तियों के विपरीत, बालाजी को गोलाकार मुंह और दाढ़ी के साथ दिखाया जाता है, जो इसे दुनिया भर में सबसे अनोखी मूर्ति बनाता है।

मंडावा - प्राचीन समय में मध्यपूर्व और चीन के मध्य का प्राचीन व्यापारिक मार्ग का एक मुख्य केन्द्र था मंडावा यहाँ से सामान का आदान प्रदान किया जाता था। यहाँ के ठाकुर नवल सिंह ने नवलगढ़ और मंडावा पर शासन किया। मंडावा में एक किला बनवाया तथा किले के चारों तरफ नगर बसाया यहाँ अनेक बड़े व्यापारी आकर बस गए, जिन्होंने अनूठी, अदभुत, अजब-गजब हवेलियों की नींव रखी और इस नगर को पर्यटकों का आकर्षण केन्द्र बना दिया। इस किले के भित्ति चित्र काँच का काम तथा आकर्षक मेहराबदार द्वार भगवान कृष्ण के चित्रों से शोभायमान हैं। अब यह किला एक हैरिटेज होटल में परिवर्तित कर पर्यटकों के ठहरने के लिए उपलब्ध है।

डून्डलोद - झुंझुनूं का एक उपनगर ढूंडलोद अपने किले, हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है, जिसे शासक सरदार सिंह के पुत्र केसरी सिंह ने 1750 ई. में बनवाया था। दिल्ली जयपुर तथा बीकानेर से सड़क मार्ग पर स्थित यह किला राजपूत और मुगल शैली की स्थापत्यकला का मिश्रण है। किले के पास बनी रामदत्त गोयनका की छतरी 1858 ई. में बनवाई गई थी। इसके गुम्बद केन्द्र में फूलों के अलंकरण तथा चित्र सुसज्जित हैं। डून्डलोद में पाए जाने वाले मारवाड़ी घोड़ों की नस्ल पूरी दुनियां में प्रसिद्ध है।

अलसीसर - मरूस्थल से घिरा झुंझुनूं में एक छोटा-सा नगर है अलसीसर । अलसीसर ठाकुर समर्थ सिंह को सम्मानपूर्वक अपने पिता ठाकुर पहाड़ सिंह से मिला जिन्होंने 1783 ईस्वी में इसे अपनी राजधानी बनाया था। प्रसिद्ध अलसीसर महल राजपूत स्थापत्यकला का एक अच्छा उदाहरण है। इसकी दीवारों पर शेखावत ठिकानेदार द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं के सुंदर भित्ति चित्र उत्कीर्ण करवाये गये थे। अपने राजस्थानी आतिथ्य के लिए विख्यात अलसीसर और यहाँ के प्रसिद्ध महल, हवेली पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यहाँ आप केजरीवाल हवेली, लक्ष्मीनारायण मंदिर, ठाकुर चाटू सिंह की छतरी, रामजस झुंझुनूंवाला की हवेली और अन्य स्थलों को देखना न भूलें।

बिसाऊ - मूल रूप से विशाला जाट की ढाणी नाम के झुंझुनूं के एक गांव को बिसाऊ कहा जाता है। यह ठाकुर केसरी सिंह को उनके पिता महाराव शार्दुल सिंह जी द्वारा दिया गया था। केसरी सिंह ने एक किला और रक्षात्मक दीवार का निर्माण कराकर इसकी सीमा को मजबूत किया 1746 ईस्वी में उन्होंने इसका नाम बिसाऊ रखा बिसाऊ के शासक शेखावाटियों के भोजराज कबीले से संबंधित रहे हैं, जो प्रसिद्ध शासक महाराव शेखा के वंशज थे।

नवलगढ़ - झुंझुनूं और सीकर के बीच स्थित, नवलगढ़ अपनी सुन्दर हवेलियों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ कई फिल्मों की शूटिंग भी की गई है, जिसमें कुछ भारतीय तथा कुछ विदेशी फिल्में भी हैं। यहाँ का आकर्षक किला ठाकुर नवल सिंह ने बनवाया था तथा इसके पास रूप निवास, उद्यान तथा फव्वारों से सुशोभित है। इसे अब एक हैरिटेज होटल में परिवर्तित कर दिया गया है।

मेले एवं त्यौहार - शेखावाटी के उत्सव का हिस्सा बनें। आइए राजस्थान, जहां हर दिन एक उत्सव है। विविध गतिविधियाँ, पर्यटन और रोमांच शेखावाटी में आपका इन्तजार कर रहे हैं। राजस्थान में करने के लिए सदैव कुछ अनूठा है।

विरासत की सैर - (हेरिटेज वॉक) पुराने शहर चूरू में बहुत ही सुंदर भित्तिचित्रित हवेली, संकरी गलियां और पुरानी विरासत संरचनाएँ है। चुरू के समृद्ध इतिहास और विरासत की एक झलक पाने के लिए यहां पर सुबह शाम चले आईये ।

कैसे पहुँचे-हवाई मार्ग-निकटतम हवाई अड्डा जयपुर 113 किलोमीटर है।,

सड़क मार्ग-दिल्ली और राजस्थान के अन्य प्रमुख शहरों से शेखावाटी की ओर सीधी बसें है।**रेल मार्ग**-दिल्ली और जयपुर से नियमित रेल सेवायें उपलब्ध हैं। शेखावाटी की आनंदमय यात्रा का अनुभव लें। अपनी यात्रा की योजना बनाएं।**शेखावाटी के समीप दर्शनीय स्थल**-जयपुर - 203 किलोमीटर, बीकानेर 180 किलोमीटर,नागौर- 194 किलोमीटर

कर्मठ मनीषियों की सतत साधना का सुफल

शिक्षावाटी(शेखावाटी) का गौरव अनुपम – नव्य गुरुकुल – प्रिंस एजुकेशन हब

सीकर। अपने अफसरों को देखकर भारतीय सेना में सेवारत हवलदार श्री गोपाल सिंह सुण्डा ने सपना संजोया कि मेरे बच्चे भी अफसर बनें। इस हेतु उन्होंने अपने दोनों बेटों को छोटी कक्षाओं में ही बोर्डिंग स्कूल में प्रवेश दिलवा दिया। बोर्डिंग स्कूल के चार वर्षों में दोनों बेटों ने शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक दोनों ही क्षेत्रों में काफी उन्नति की।

भारतीय सेना से रिटायरमेंट पर श्री गोपाल सिंह सुण्डा को 1.50 लाख रू. पैंशन के तौर पर मिले। उन पैसों से बच्चों की उच्च शिक्षा के लिए सीकर शहर के बाहरी क्षेत्र में 50 गुणा 40 फीट के प्लॉट में बना पुराना मकान खरीद लिया।

उच्च शिक्षा के दौरान ही बड़े बेटे जोगेन्द्र सुण्डा के मन में शिक्षण संस्थान शुरू करने का विचार आया। पिताजी का सपना अफसर बनाने का था, इसलिए पिताजी से अनुमति लेने की हिम्मत नहीं हुई। सोच विचार किया और अंततः इस पुराने मकान के बाहर "ज्ञानार्थ प्रवेश - सेवार्थ प्रस्थान" लिखवाकर प्राथमिक स्कूल शुरू कर दिया। प्रथम वर्ष में केवल 35 विद्यार्थी जुड़े।

न मजबूत आर्थिक पृष्ठभूमि थी ना ही अनुभव... था तो केवल कुछ अलग करने का जुनून। शुरूआती दौर बहुत संघर्षपूर्ण रहा। इसी दौरान छोटे भाई पीयूष सुण्डा का चयन राजस्थान के प्रतिष्ठित एसएमएसमेडिकल कॉलेज, जयपुर में एमबीबीएस कोर्स में हुआ।

पिताजी के सपने के मुताबिक जोगेन्द्र सुण्डा ने भी साथ-साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी जारी रखी। इसी दौरान पुलिस सब इंस्पेक्टर का फिजिकल एवं सीडीएस का इंटरव्यू भी दिया। भाग्य को भी कुछ अलग ही मंजूर था, अतः दोनों परीक्षाओं की मेरिट लिस्ट में चयन नहीं हुआ और इसी के साथयह निश्चय कर लिया कि अब पूरा ध्यान केवल स्कूल पर ही देना है। अपनी छोटी सी टीम एवं गिने चुने बच्चों के साथ दिन-रात मेहनत करके जोगेन्द्र सुण्डा ने अभिभावकों का विश्वास जीतना शुरू किया। इसी दौरान छोटे भाई पीयूष सुण्डा ने अपनी एमबीबीएस की पढ़ाई के बीच हर वर्ष दो-तीन महीने आकर प्रबंधन एवं शैक्षणिक कार्य में साथ देना शुरू किया। प्रिंस स्कूल केविद्यार्थियों का नाम राजस्थान बोर्ड की मेरिट लिस्ट में छपने लगा। धीरे धीरे हर वर्ष मेरिट लिस्ट में प्रिंस स्कूल का नाम आना एक परम्परा सी बन गई। विद्यार्थियों की संख्या बढ़ने लगी। छात्रावास का दौर शुरू हुआ। पिता श्री गोपाल सिंह सुण्डा निर्माण कार्य की देखरेख में लगे।

देखते ही देखते एक के बाद एक नई शैक्षणिक संस्थाएँ (स्कूल्स, कोचिंग्स, कॉलेजेज) शुरू होनेलगी। संघर्ष के दौर के बीच आत्मविश्वास बढ़ाने वाली उपलब्धियाँ प्रिंस के नाम जुड़ने लगी। प्रतिवर्ष संस्था के हजारों विद्यार्थी डॉक्टर, आईआईटीयन, सिविल ऑफिसर, डिफेंस ऑफिसर एवं अन्य क्षेत्रों में चयनित होने लगे।

इसी दौरान डॉ. पीयूष सुण्डा ने पीडियाट्रिक्स में पीजी कर सरकारी चिकित्सा अधिकारी के पद पर सेवा देना प्रारम्भ किया। निजी हॉस्पिटल खोलने का प्रयास भी किया लेकिन समय को कुछ और ही मंजूर था। आखिरकार निर्णय किया कि नये क्षेत्र के बजाय नौकरी छोड़कर दिन प्रतिदिन बढ़ रहे प्रिंस एजुकेशन हब को ही और मजबूत किया जाये।

समय के साथ प्रबंधन एवं शैक्षणिक टीम में कर्मठ लोग जुड़ते गये। विद्यार्थियों ने बोर्ड परीक्षाओं, प्रतियोगी परीक्षाओं, खेलकूद सभी क्षेत्रों में राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाना शुरू किया।

ई देखते ही देखते 50 गुणा 40 फीट के एक छोटे से मकान में 35 विद्यार्थियों के साथ शुरू हुई प्रिंस स्कूल आज 9 वर्ल्ड क्लास कैम्पस, 18000+ विद्यार्थियों, 1650+ समर्पित कार्मिकों के साथ देश भर में सुप्रसिद्ध प्रिंस एजुकेशन हब बन गया है। विद्यार्थियों एवं अभिभावकों द के विश्वास और ईश्वर के आशीर्वाद से निरंतर नवाचारों के साथ यह प्रगति यात्रा अनवरत जारी है।

साढ़े तीन शताब्दी पुराना राजर्षि ठा. मदनसिंह का दांता

दांता को बसे हुए 352 वर्ष 7 महीने 13 दिन हो चुके है | दांता सीकर जिले की बड़ी ग्राम पंचायत है | दांता संस्थापक ठा. अमरसिंह से लेकर अंतिम शासक ठा. मदनसिंह तक 16 राजाओं ने राज किया | दांता के संस्थापक ठा. अमरसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र रतनसिंह रजा बने | उसी काल में उन्होंने दांता में नृसिंह भगवान् व हनुमान मन्दिर बनवाये थे | विक्रम संवत 1795 में पहाड़ पर गढ़ का निर्माण करवाया था | ठा. रतनसिंह की मृत्यु के रतनसिंह की मृत्यु के बाद उनके पुत्र गुमानसिंह राजा बने जो जयपुर के महाराजा सवाई जयसिंह के प्रतिष्ठित एवं कृपापात्र सरदार थे। ठा. गुमानसिंह बड़े दानी थे। उनके बाद सवाईसिंह को दांता का राजा बनाया। सवाईसिंह के चार रानियां एवं दो पुत्र भवानीसिंह व माधोसिंह को जागीर में ग्राम सुरेरा दिया गया । ठा. सवाईसिंह की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र भवानीसिंह राजा बने । जिन्होंने विक्रम संवत 1811 में नीचे वाला गढ़ बनवाया । भवानीसिंह ने दांता में मरहटा मल्हारराव से युद्ध किया था। भवानीसिंह अपने समय के वीर प्रसिद्ध व्यक्ति थे। इनके दो रानियां व तीन पुत्र थे इनकी मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र हरिसिंह राजा बने । उनके दो पुत्र था। बाद में अमानीसिंह राजा बने। उदयसिंह की मृत्यु के बाद ठा. प्रेमसिंह राजा बने जो इससे पूर्व जयपुर राज्य की अपीलांट कोर्ट में जज रहे थे। ठा. प्रेमसिंह ने जयपुर में दांता हाऊस बनवाया था। करणीकोट माला पर शिकारगाह व प्रेम सरोवर तालाब बनवाया था। साथ ही ग्राम में बड़े तालाब का निर्माण भी करवाया था। दांता ठा. श्री मदनसिंह अपने पूर्वज श्री अमरसिंह की सोलहवीं पीढ़ी में थे। ठा. मदनसिंह भू-स्वामी आन्दोलन के अध्यक्ष रहे थे एवं दांतारामगढ़ विधानसभा क्षेत्र के तीन बार विधायक रहे थे। मंदिरों की नगरी दांता में पांच दर्जन मंदिर हैं। अधिकांश मंदिर प्राचीन है।

प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी थे राजर्षि ठाकुर मदनसिंह दांता

दांतारामगढ़. दांता ठाकुर मदनसिंह का जन्म ठाकुर गंगासिंह के यहां माता सुरज कंवर की कोख से रामनवमी सन् 1919 को हुआ। उन्होंने व मेयो कॉलेज अजमेर में शिक्षा प्राप्त की । उसके बाद फौज सवाईमानसिंह गार्ड में द्वितीय लेफ्टिनेंट का पद संभाला। द्वितीय विश्वयुद्ध में फौज के साथ में तीन वर्ष तक यूरोप में रहे। विदेश से लौटने के बाद विवाह ठाकुर ओनारसिंह कचोलियो की सुपुत्री नान्द कंवर के साथ हुआ। 14 जुलाई सन् 1944 को दांता गढ़ में राज्याभिषेक हुआ। 45 गांवों के तीन साल तक राजा रहे।

दानवीरता की मिसाल कायम की थी

दांता गौशाला की स्थापना के लिए गोपाल गौशाला के लिए दो सौ बीघा जमीन दान की थी एवं श्री मदन गौशाला लोसल के लिए भी आपने पांच सौ बीघा जमीन दान की थी। लोसल गौशाला का नाम भी जमीन दान देने पर इनके नाम पर ही रखा गया था। सायर बाईसा जो बालब्रह्मचारी थे उन को हुडील चारणवास से लाकर अपने माला वाले महल को करणीकोट मंदिर बना दिया और माला के नीचे की पांच सौ बीघा जमीन दान कर दी। 1962 में भारत चीन युद्ध के दौरान तत्कालीन रक्षामंत्री वी के कृष्ण मेनन 27 अक्टूबर सन् 1962 को राजस्थान की राजस्थानी जयपुर आए थे रामनिवास बाग में मेनन की सभा चल रही थी तभी ठाकुर मदनसिंह मंच पर आए और मेनन को उस जमाने में एक लाख एक हजार रुपये और एक सोने की मूठ की तलवार भेंट की। साथ ही ठाकुर साहब ने घोषणा की कि वे अपने सौलह वर्षीय पुत्र ओमेंद्र सिंह को भी मातृभूमि की रक्षार्थ प्राण न्यौछावर करने के लिए अर्पित करता हूं । बीबीसी लंदन ने भी इस कार्य की सराहना की गई। ठा. मदनसिंह राजस्थान में रामराज्य परिषद् के संस्थापकों में थे |

252 गांवों को कुंभाराम लिफ्ट से मिलेगा फायदा

दांतारामगढ़. दांतारामगढ़ में पानी की भयंकर समस्या है। भूमिगत जल स्तर भी दिन प्रतिदिन गिरता जा रहा है। 300 से 400 फुट नीचे पानी है । उपखंड के प्रत्येक गांव में पानी की भयंकर समस्या है जिसके कारण से आमजन परेशान रहता है बारिश कम होने के कारण से भी भूमिगत जल स्तर नीचे जा रहा है। जिससे आमजन को गर्मियों के दिनों में पानी के लिए विकट समस्या का सामना करना पड़ता है। गर्मी के समय में लगभग गांवों में आमजन पानी के टैंकर मंगवाते है। यदि कुंभाराम लिफ्ट परियोजना से उपखंड जुड़ जाता है तो 252 गांवों को फायदा मिलेगा। पानी की विकट समस्या का हो सकता है । दांतारामगढ़ विधायक वीरेंद्र सिंह का कहना है कि पिछले बजट सत्र मे मुख्यमंत्री ने 7700 करोड घोषणा की थी । आगामी बजट सत्र में वर्क होगा और पूरे सीकर झुंझुनू के सभी विधायक इस परियोजना के लिए प्रयासरत है।

वर्तमान राज्य सरकार के तीन वर्ष के कार्यकाल में पर्यटन विभाग द्वारा सीकर जिले में पर्यटन विकास की महत्वपूर्ण उपलब्धियां अर्जित की गई है

ॐ वित्त वर्ष 2019-20 में 1359.00 लाख रूपये से ईकॉलोजी पार्क लक्ष्मणगढ़ का निर्माण कार्य प्रगति पर है। इससे वन्यजीव पर्यटन, इको ट्यूरिज्म तथा शेखावाटी हेरिटेज ट्यूरिज्म को बढावा मिलेगा।

ॐ वित्त वर्ष 2021-22 में शेखावाटी पर्यटन सर्किट विकसित किया जायेगा, जिसमें लोहार्गल, शाकम्भरी माता मंदिर, हर्षनाथ पहाड़ी, जीणमाता मंदिर, नवलगढ़, डूंडलोद, मंडावा, लक्ष्मणगढ़, फतेहपुर, रामगढ़ शेखावाटी, महनसर, अलसीसर, मलसीसर एवं खेतड़ी सम्मिलित किये गये है। साथ ही, पर्यटक सूचना केन्द्र, सीकर को पर्यटक स्वागत केन्द्र के रूप में क्रमोनयन किया गया है। वित्त वर्ष 2021-22 में राज्य में सर्वधर्म सद्भाव को बढ़ावा देने के लिए 100 करोड़ रूपये की लागत से विभिन्न धार्मिक स्थलों के विकास के साथ-साथ सीकर जिले के खाटूश्यामजी-सीकर व हकीम साहब की दरगाह-सीकर को धार्मिक पर्यटन सर्किट के तहत विकसित किया जायेगा। वित्त वर्ष 2021-22 में लक्ष्मणगढ़- सीकर के धार्मिक पर्यटक स्थलों- श्री सांगलपति आश्रम, कुमास जागीर, गुलाबजति आश्रम-गाड़ोदा, श्री गोसांई मंदिर-कटेवा, गोविन्द नाथ जी आश्रम-डूडवा एवं भक्त शिरोमणि कर्माबाई मंदिर-घस्सू का बास में विभिन्न विकास कार्य करवाये जायेंगे।

वित्त वर्ष 2021-22 में मुख्यमंत्री के बजट घोषणा अनुसार पर्यटक सूचना केन्द्र, सीकर को क्रमोन्नत कर पर्यटक स्वागत केन्द्र, सीकर बनाया गया तथा राशि रूपये 363.09 लाख कार्यालय भवन निर्माण के लिए स्वीकृत किये गये है। इसे मॉडल पर्यटक स्वागत केंन्द्र के रूप में विकसित किया जायेगा। कार्यालय भवन में सोवेनियर शॉप्स स्थापित की जायेगी जिसके माध्यम से शेखावाटी क्षेत्र तथा राज्य के हस्तशिल्प को प्रोत्साहित किया जायेगा। कार्यालय परिसर में पर्यटकों के वर्चुअल दूर के लिए एक मिनी ऑडिटोरियम बनाया जायेगा। जहां पर पर्यटकों को शेखावाटी क्षेत्र एवं राज्य के पर्यटन क्षेत्रों, हवेलियों, कस्बों, पर्यटन स्थलों, स्थानीय ग्रामीण जीवन शैली इत्यादि का प्रदर्शन किया जायेगा।

लक्ष्मणगढ़ में पर्यटन के लिये राणी सती मंदिर पाटोदा, केसर की ढाणी से राजकीय अस्पताल तक सम्पर्क सड़क राशि 46.23 लाख रूपये स्वीकृत होकर व्यय राशि 45.95 लाख रूपये की लागत से कार्य पूर्ण किया गया है, ईकोलोजी पार्क, लक्ष्मणगढ के लिये राशि 1359.00 लाख रूपये स्वीकृत होकर राशि 276.69 लाख रूपये का व्यय कर कार्य प्रगति पर है, माता जी मंदिर पीपली, मालदास बाबा राजपुरा, गोगापीर धाम यालसर, मस्तराम धाम बीदासर के लिए राशि 200.01 लाख रूपये की स्वीकृति में राशि 135.42 लाख रूपये का कार्य पूर्ण हो चुका है।

इसी प्रकार बाबा बोगन, सोमेश्वर महादेव मंदिर पाटोदा, श्रीजी मंदिर हापास, पूर्णभक्त धाम मंदिर मिरण, संत शिरोमणी कृपाराम सुठोठ, लोठ स्मारक बठोठ में 274.97 लाख रूपये की स्वीकृत राशि में से 227.35 लाख रूपये व्यय कर कार्य पूर्ण हो चुका है, सिद्धेश्वर महादेव मंदिर खुड़ी बड़ी में स्वीकृत 45.84 लाख रूपये की राशि में से 32.77 लाख रूपये व्यय किए गए हैं, जिसका कार्य प्रगतिरत है। लक्ष्मणगढ़ स्थित धार्मिक पर्यटन स्थल श्री सांगलपति आश्रम कुमास जागीर, गुलाबजति आश्रम, गाडोदा, श्री गुसाई मंदिर कंटेवा श्री गोविन्द नाथ जी महाराज आश्रम ग्राम डूडवा एवं भक्त शिरोमणि करमा बाई मंदिर घस्सू का बास केविभिन्न पर्यटन विकास कार्य के लिए पंचायत समिति लक्ष्मणगढ एवं नेछवा में राशि 12509 लाख रूपये में से 50.00 लाख रुपये व्यर्थ किये जा चुके हैं तथा श्री ठाकुर जी मंदिर पालकी लक्ष्मणगढ सीकर में यात्रिका, जनसुविधाओं तथा जीर्णोद्धार कार्य के लिए स्वीकृत 34.92 लाख रूपये में से 15.00 लाख रूपये व्यय किये जा चुके है। जिले में लक्ष्मणगढ़ ब्लॉक में प्रथम बार लक्ष्मणगढ़ में शेखावाटी उत्सव 2021 का 22 मार्च 2021 को आयोजन किया गया | अब दूसरी बार ये आयोजन लक्ष्मणगढ़ में ही 20 से 22 मार्च तक आयोजित होगा ।

सादर - श्रद्धांजलि

चेहरे पर एक सुनहरी मुस्कान, लहराता हुआ स्नेहिल हाथ
हमें नहीं कहना, ना हम कहेंगे, कि वो गये,वो हैं यहीं.....
न जाने कौन से देश, प्यार भरे संसार में
जैसा यहाँ का प्यार, हमें नहीं कहना, ना हम कहेंगे
की वो गये, वो हैं यहीं.....

श्री कमल महावीरप्रसाद मोरारका
18/06/1946 – 15/01/2021
योगयुक्तो विशुद्धात्मा विजितात्मा जितेन्द्रियः|
सर्वभूतात्मभूतात्मा कुर्वन्नपि न लिप्यते ||
जो शुद्ध अन्तःकरण, आत्मसंयमी तथा जितेन्द्रिय पुरुष भक्तिभाव से कर्म करता है, वह सब प्राणियों को प्रिय होता है उसे भी सब प्राणी प्रिय होते है | नित्य कर्म करते हुए भी वह कभी नहीं बंधता |

सम्पादक,प्रकाशक,मुद्रकः शशिकान्तजोशी, जयन्ती प्रकाशन लक्ष्मणगढ़ (सीकर) राजस्थानकृष्णाप्रिन्टर्स के लिये सागरकम्प्यूटर, जयपुर द्वारा मुद्रित,प्रबन्ध सम्पादक- डॉ महेन्द्रआचार्य, समाचार सम्पादक- भानुप्रकाश जोशी